चौ० चरण सिंह, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

हिसार, हरियाणा

ई–मेल : web@hau.ernet.in

lexz flQkfj'ksa cUnxksHkh

उद्यान विभाग, हरियाणा

उद्यान भवन, सेक्टर–21, पंचकुला–134116

दूरभाष नं :–0172–2582322, वेबसाइट : www.hortharyana.govt.in

y?kq d"kd d`f"k&O;kikj l?k gfj;k.kk ¼lQd½

m|ku Hkou] lsDVj&21] iapdqyk&134116] gfj;k.kk

दूरभाष :–0172–2581322, ई–मेल : sfacharyana@gmail.com

वेबसाइट : http://hortharyana.gov.in/en/sfach,
http://sfachharyana.org.in

gfj;k.kk d'f"k fo'ofo|ky; }kjk fl Qkfj'k dh xbZ fdLeksa

1.	उन्नत किस्में	अगेती किस्म	प्राईड ऑफ इंडिया तथा गोल्डन एकड़
2.	भूमि की तैयारी: बन्दगोभी अनेक प्रकार की मिट्टी को हल्का और भूरभूरा बना लना चाहिए।		
3.	बिजाई का समय : सितम्बर से नवम्बर के प्रथम सप्ताहतक		
4.	बीज की मात्रा : 200–250 ग्रा. प्रति एकड़		
5.	पौध तैयार करना	क्यारियों की सख्या क्यारियों का साईज़	15–20 प्रति एकड़ (3.0 ग 10 मी.)
	ukV% 1. क्यारियों की अच्छी प्रकार खुदाई करके उसमें गोबर की खाद 2 सें.मी. मोटी तह बिछा कर मिट्टी में मिला दें। 2. बीज छिड़काव या पक्तियों में बोयें और गोबी की सड़ी खाद की पतली तह से ढक दें। 3. अगेती किस्मों की पौध को तेज धूप से बचाने के लिए सरकंडें के छपर से ढक दें। क्यारियों में पर्याप्त नमी के लिए फव्वारे से पानी देना चाहिए।		
6.	रोपाई की विधि	बन्दगोभी की पौध को इच्छित आकार की समतल क्यारियों में लगााया जाता है। क्यारी से क्यारी की दूरी 45–60 सें.मी. पौधे से पौधे की दूरी 30–45 से.मी.।	
7.	खाद व उर्वरक (प्रति एकड़)	गोबर खाद नाईट्रोजन फास्फोरस पोटाश जिंक सल्फेट	20 टन 50 कि.ग्रा. 20 कि.ग्रा. 20 कि.ग्रा. 8–10 कि.ग्रा
	ukV% पूरी गोबर खाद, फास्फोरस तथा पोटाश और 1/3 नाइट्रोजन की मात्रा पौध लगाने से पहले देनी चाहिए तथा बाकी बची नाइट्रोजन की मात्रा बाद में खड़ी फसल में दो बार करके छिड़के।		
8.	सिंचाई	अगेती किस्म के लिए पछेती किस्म के लिए	5–6 दिन के अन्तर 10–15 दिन के अन्तर
	ukV% फूल (कर्ड) बनते समय खेत में काफी नमी होनी चाहिए। इसके लिए सिचांई समय पर करनी चाहिए।		
9.	खराब (सोडिक) पानी के साथ जिप्सम का प्रयोग	एक मि.ली. तुल्यांक प्रति लीटर आर.एस.सी. को निर्रस्थीकरण करने के लिए जिप्सम 32 कि.ग्रा. (80 प्रतिशत शुद्धता) प्रति सिंचाई प्रति एंकड़ तथा 8 टन गोबर की सड़ी हुई खाद प्रति एकड़ डालने से तैलिय पानी का प्रभाव कम हो जाता है।	

10.	कटाई का समय	पत्ता गोभी के हैड को तभी काटना चाहिए जब वे ठोस, पूरे आकार के हो जाएं। अगेती किस्मों की कटाई दो–तीन बार तथा पछेती किस्में एक ही बार में काटी जा सकती है। अगेती किस्मों को रोपाई के बाद तैयार होने में 60–80 दिन लगते हैं जबकि पछेती किस्मों को 100–120 दिन लगते हैं।	
11.	हानिकारक कीड़े:		
		कीड़े व लक्षण	रोकथाम एवं सावधानियां
क.	डायमंड बैक मोथ	यह हरे रंग का छोटा कीट है जो जरा–सा छूने पर एकदम से उछल पड़ता है। इसकी छोटी सूण्डियां पत्तियों को खुरच–खुरच कर खाती हैं तथा सिर्फ सफेद झिल्ली छोड़ देती हैं। बड़ी सूण्डियां गोल सुराख बनाती हैं। इसका प्रकोप अगस्त से शुरु हो जाता है ।	400 ग्राम बेसीलस थूयरि–नजिएंसिस (बायोआस्प) घुलनशील पाउडर 300 मिली डायजिनान (बासुडीन) 20 ई.सी. या 60 मि.ली डायक्लोरवास (नुवान) 76 ई.सी. या 400 मि.ली. मैलाथियान 50 ई.सी. को 200–250 लीटर पानी में घोलकर एक एकड़ में छिड़काव करें। अगला छिड़काव 7–10 दिन के अंतर पर करें।
ख.	तम्बाकू की सूण्डी	इस कीट का प्रकोप कहीं–कहीं होता है। इसकी छोटी सूण्डियां एक जगह इकट्ठी रहती हैं परन्तु बड़ी होने पर सारे खेत में फैल जाती हैं। बड़ी सूण्डी पीले–भूरे रंग की होती हैं जो हरी से बैंगनी चमक देती है। इसका प्रकोप सितम्बर से नवम्बर तक होता है।	क्रमांक 2 से 5 तक बताएं कीड़ों की रोकथामक के लिए 400 मि.ली मैलाथियान 50 ई.सी. को 200–250 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ फसल पर छिड़काव करें। दस दिन के अंतर पर अगला छिड़काव करें।
ग.	कुबड़ा कीड़ा	हरे रंग की यह सूण्डी लूप बनाकर चलता है तथा बन्द गोभी की सूण्डी की तरह नुकसान करता है।	
घ.	चेपा	कीट के शिशु व प्रौढ़ रस चूसते हैं जिससे पौधों की बढ़वार रुक जाती है।	

12. बिमारियां व उसके लक्षण

		बीमारी व लक्षण	रोकथाम
क.	गलन रोग	अग्रेजी भाषा के वी के आकार के पीले धब्बे पत्तें के किनारों पर दिखाई देते हैं जो बाद में गहरे–काले व भूरे हो जाते हैं। पत्तों की नसें काली पड़ जाती हैं और पत्ते सूखकर गिर जाते है।	बीज ऐसे क्षेत्र से प्राप्त करें जो जीवाणुज रोग से मुक्त हो और पौध भी रोगरहित हो। बिजाई से पहले एमिसान या कैप्टान या थाईरम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज का उपचार करें। फसल पर स्ट्रैप्टोसाईक्लीन 200 मि.ग्रा. को एक लीटर पानी में मिलाकर तथा 0.1 प्रतिशत कॉपर ऑक्सीक्लोराईड–50 एक ग्राम प्रति लीटर में घोलकर 2–3 छिड़काव करें। फसल कटाई के बाद बचे हुए, बीमारी वाले कूड़े–कचरे के ढेर को जलाकर नष्ट करें।
ख.	डाऊनी मिल्डयू	छोटे पिन के आकार के अनेक धब्बे बनते हैं जो बाद में आपस में मिलकर बड़ा रुप ले ले लेते हैं और उनका रंग पीला अथवा हल्का भूरा हो जाता है। अत्यधिक रोगग्रस्त पत्तियां सूख जाती हैं, रोग की उग्र अवस्था में फूल भी भूरे हो जाते हैं। असामयिक बारिश रोग की उग्रता बढ़ाने में सहायक है।	रोग के लक्षण दिखाई देने पर 400 ग्राम प्रति एकड़ मैन्कोजेब / इण्डोफिल एम–45 को 200 लीटर पानी में मिलाकर लगभग 10–12 दिन की अवधि पर 3–4 छिड़काव करें। कोई चिपकिने वाला पदार्थ, जैसा कि प्याज की बीमारी में बताया गया है, अवश्य मिलाएं।
ग.	आद्रगलन रोग	पौधशाला के इस रोग में अंकुरण से पहले व बाद में दोनों ही अवस्थाओं में पौध मर जाती है।	बजाई से पहले बीज का एमीसान या कैप्टान से (2.5 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम की दर से) उपचार करें। पौधों के निकलने पर 0.2 प्रतिशत कैप्टान के घोल का बिजाई के तीसरे व दसवें दिन छिड़काव करें। नर्सरी तथा रोगी खेत में तीन वर्ष का फसल–चक्र अपनाएं।
घ.	आल्टरेनिया अंगमारी	पत्तों पर गोल आकार के पीले–भूरे धब्बे बनते हैं। बीज वाली फसल में फलियों पर भी भूरे धब्बे बनते हैं।	रोकथाम के लिए वही उपाय अपनाएं जो कि डाऊनी मिल्डयू के लिए बताया गया है।